ANCIENT INDIAN HISTORY & ARCHAEOLOGY, PATNA UNIVERSITY, PATNA

इतिहास लेखन की प्रारंभिक अवस्था अथवा इतिहास लेखन की वैदिक परंपरा या वैदिक अवधारण

PG / M.A. 3rd Semester

CC-12, Historiography, History of Bihar & Research Methodology

Dr. Manoj Kumar
Assistant Professor (Guest)
Dept. of A.I.H. & Archaeology,
Patna University, Patna-800005
Email- dr.manojaihcbhu@gmail.com

इतिहास लेखन की प्रारंभिक अवस्था अथवा इतिहास लेखन की वैदिक परंपरा या वैदिक अवधारण

हिस्ट्री (History) शब्द हिस्टोरिका से बना है। इसका अर्थ अन्वेषण से है। परंतु भारत के संदर्भ में जो इतिहास शब्द की वैदिक साहित्य से अवधारणा प्राप्त होती है। अर्थात भारत के संदर्भ में जो इतिहास शब्द है वैदिक साहित्य से प्राप्त होता है। उत्तर वैदिक काल में इतिहास शब्द इतिहास पुराण युग्म शब्द मिलता है। इसके महत्व को दर्शाने के लिए इसे पंचम वेद भी कहा गया है। अर्थशास्त्र में भी इतिहास को वेद कहा गया है। इसके अतिरिक्त आख्यान, इतिवृत्त, उदाहरण, पुराण, आख्यायिका आदि शब्द भी इतिहास के संदर्भ में प्रयोग किए जाते हैं। आख्यान पुरानी कथाओं का वाचन है। पुराण पूरा कथाएं हैं। इतिवृत्त जो अपने आप को दोहराता है।

प्राचीन भारत में समय चलित अर्थात समय चक्रीय प्रक्रिया मिलती है और लगातार भौतिक तथा नैतिक पतन को इंगित करती है। यह सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलयुग के चक्र सिद्धांत पर प्रदर्शित होता है। इन युगों का क्रम लगातार गिरने वाला है। फिर वहां पर आ जाता है।

जो भूतकाल है वह हमारे लिए हमेशा बेहतर होता है। आख्यान, उदाहरण, पुराण यह बताता है कि प्राचीन समय अंधा था। हम

इतिहास लेखन की प्रारंभिक अवस्था अथवा इतिहास लेखन की वैदिक परंपरा या वैदिक अवधारण

अपने याददाश्त में अपने इतिहास को उन्ही क्षणों को याद रखते हैं जो स्वर्णिम थे। उन्ही कृतियों को जिनमें महज कार्य किए गए थे। इतिहास हमेशा से स्वयं में नैतिक सिद्धांतों को संजोए हुए हैं। और उसको पढ़ने या जानने का प्रमुख उद्देश्य अपने पुराने गौरवान्वित क्षणों से प्रभावित होकर वर्तमान में नैतिक और अच्छे काम करें। इसीलिए इतिहास का एक नाम उदाहरण भी देखने को मिलता है।

इतिहास हमेशा धर्म से जुड़ा हुआ था। वैदिक पौराणिक साहित्य से हमें इतिहास के विषय में ज्ञान प्राप्त होता है। राजतरंगिणी आदि में भी हमें इतिहास संबंधी सूचनाएं प्राप्त होती हैं जिनमे कुछ मिथक ही है।

इतिहास लेखन की वैदिक अवधारणा :

ऋग्वेद में इतिहास से संबंधित शब्द गाथा और नाराशम्शी प्राप्त होता है। ऋगवेद में प्रारंभ से ही ऋचाओ के साथ-साथ उनमें कई ऐसे मंत्र हैं जो अतीत में घटी हुई लौकिक घटना के बारे में वर्णन करते हैं। उदाहरण के लिए दानस्तुति। ऋगवेद में ऐसे अनेक उद्धरण है जिसमें कि एक ऋषि अपने यजमान से यज्ञ करते हुए कह रहे है कि आपके पूर्वजों ने बहुत पहले बड़ा यज्ञ आयोजित किया था। इस यज्ञ में हजारों गाय आदि

दान में दी गई थी । इस तरह ऋग्वेद में अनेक उद्धरणों में ऋषियों, महत्वपूर्ण राजाओं (यजमान), नायक, उनके वंश (वंशावली) का भी संदर्भ प्राप्त होता है । उदाहरण के लिए भृगु, अत्रि, वशिष्ठ, विश्वामित्र आदि कि वंशावली हमें वैदिक साहित्य में मिलती है ।

ऋग्वेद में अलग-अलग मंडल अलग- अलग ऋषियों द्वारा लिखे गए हैं । इसके अतिरिक्त वैदिक साहित्य में गोत्र एवं परंपरा का उल्लेख प्राप्त होता है जो अतीत के उद्धरण को इंगित करता है । परंतु सर्वाधिक महत्वपूर्ण पक्ष ऋग्वेद में इतिहास लेखन से संबंधित वे अंश हैं जिनमें अनेक गाथाएं और नाराशम्शी हमें प्राप्त होता है । उदाहरण के लिए परिक्षित-जन्मेजय की गाथा, शुन-शेप, पुरुर्रवा-उर्वशी संवाद, भरत-दुष्यंत शकुंतला की गाथा इत्यादि ।

ये सभी संदर्भ हमें प्राचीन भारतीय वैदिक इतिहास लेखन अवधारणा को समझने में तथा उनके विषय में जानने में सहायता पहुंचाते हैं ।